(Pages : 4) **L – 6194**

Reg. No. : .....

Name : .....

First Semester M.A. Degree Examination, August 2021

Hindi

HL - 211 ANCIENT POETRY : EARLY AND RITI PERIODS

(2015 Admissions Onwards)

Time : 3 Hours Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखिए :

1. 'मैथिली कोकिल' नाम विख्यात कवि कौन है?

   (भूषण, बिहारी, विद्यापति, केशवे)

2. उत्तर मध्यकाल के लिए शुक्ल जी ने क्या नाम दिया है?।

   (भक्तिकाल, श्रृंगार काल, अलंकृत काल, रीतिकाल)

3. इनमें से रीतिबद्ध कवि कौन है?

   (केशवदास, घनानन्द, आलम, बोधा)

4. 'हिंदी साहित्य का अतीत' के लेखक कौन हैं?

   (हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, राहुल सांकृत्यायन, विश्वनाथ प्रसाध मिश्र)

5. 'शिवराज भूषण' के लेखक कौन हैं?

   (घनानंद, केशवदास, भूषण, बिहारी)

6. जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के विख्यात दरबारी कवि कौन थे?

   (भूषण, केशवदास, बिहारी, घनानंद)

gcwcentrallibrary.in

7. 'विजयपाल रासो' किसकी रचना है?

(जगनिक, नल्लसिंह, शार्ङ्गधर, चन्दबरदाई)

8. 'जहांगीर जस चन्द्रिका' के रचयिता कौन हैं?

(केशवदास, रहीम, अमीर खुसरो, रामसिंह)

9. आचार्य चामचन्द्र शुक्ल जी हिंदी का पहला कवि किसे मानते हैं?

(सरहपाद, लुइपा, शालिभद्र, चन्दबरदाई)

10. हिंदी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम किस भाषा में लिखा गया?

(फ्रेंच, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू)

(10 × 1 = 10 Marks)

II. **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए।

11. रासो शब्द की व्युत्पत्ति

12. देव का श्रृंगार वर्णन

13. 'पद्मावती समय' का कथासार

14. बिहारी की बहुज्ञता

15. भूषण के काव्य की अन्तर्वस्तु

16. विद्यापति की रचनाएँ

17. आचार्य कवि केशवदास

18. घनानंद का काव्य कौशल

(5 × 5 = 25 Marks)

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

19. 'सतसई परंपरा और बिहारी सतसई' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए।

20. पद्मावती समय के आलोक में पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक मूल्यांकन कीजिए।

gcwcentrallibrary.in

21. 'विद्यापति की पदावली में श्रृंगार काव्य की सारी मान्यताएँ दृष्टिगोचर होती है।' –समर्थन कीजिए।

22. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(2 × 10 = 20 Marks)

IV. किन्हीं **चार** अवतरणों की व्याख्या कीजिए।

23. ससन – परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर चमकाए रे जनि बीजरि देह।।
आज देखलि धनि जाइते रे मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनि संचार रे महि निरअवलम्ब।।

24. तेरे ही भुजान पर भूतल को भार,
कहिबे को सेसनाग दिगनाग हिमाचल है।
तेरो अवतार जग पोसन भरनहार,
कछु करतार को न तामधि अगल है।
साहिन मैं सरजा समत्थ सिवराज कवि,
भूपन कहत जीबो तेरोई सफल है।
तेरो करवाल करै म्लेच्छन को काल,
बिनु काज होत काल बदनाम धरातल है।।

25. मूलन ही की जहाँ अधोगति 'केशव' गाइय।
होम हुतासन–धूम नगर एकै मलिनाइय।
दुरगति दुर्गन ही जु कुटिल गति सरितन ही में
श्रीफल को अभिलाष प्रगट कविकुल के जी में।।

26. जपमाला, छापै, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन–काँचै नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु।।
तंत्री–नाद, कवित्त–रस, सरस राग, रति–रंग।
अनबूडे बूडे तरे, जे बूडे सब अङ्ग।।

27. पर काजहि देह कों धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ सब ही विधि सज्जनता सरसौ।
घन आनन्द जीवनदायक हौ कछु मेरियौ पीर हियें परसौ।
कबहूँ वा विसासी सुजान के आँगन मो अँसुवानि हूँ लै बरसौ।।

gcwcentrallibrary.in

28. कुट्टिल केश सुदेष, पौह परचियत पिक्क सद।
कमलगंध वयसंध, हंसगति चलत मन्द-मन्द।।
सेत वस्त्र सौंहे सरीर, नष स्वाति बुंदजस।।
भमर भँहि भुल्लहिं लुभाव मकरन्द बास रस रस।।
नैन निरषि सुष पाय सुक, यह सुदिन मूरति रचिय।।
उमा प्रसाद हर हेरियत मिलहिराज प्रथिराज जिया।।

29. तार मृदंगमहारव सों,
झनकारत झांझन के गन जामें।
गपंजत ढोल कदंबक पूँज,
कुलाहल, काहल नादति तामें।
भेरी घनेरी नरि सुर-नारि,
नरि सुर-नारि अलापी सभा में।
गाजत मेघ घने सुर लाजत,
बाजत माया के द्वार दमामें।

30. चाँद-सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोय आँचर धनि पोछलि दह दिसि भेल उँजोरे।
जुग-जुग के बिहि बूढ निरस उर कामिनो कोने गढ़लो।
रूप सरूप मोयँ कहइत असंभव लोचन लागि रहली।
गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए माझ खानि खीनि निमाई।
भाँगि जाइत मनसिज धरि राखलि त्रिबलि लता अरुझाई।

(4 × 5 = 20 Marks)

gcwcentrallibrary.in